International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
March-April 2020, Volume-7, Issue-2
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारत में गठबन्धन सरकार के फायदे या नुकसान : एक संक्षिप्त मूल्यांकन

Chandra Bhan Singh Sehrawat,
Research Scholar, Department of Political Science,
Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

Dr. Satyveer Singh,
Assistant Professor, Department of Political Science,
Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार—

भारतीय लोकतंत्रा संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, जहां जमीनी सच्चाई देश को गठबंधन की राजनीति की ओर धकेल रही है। पिछले दशक से लगभग हर चुनावों के बाद किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के कारण विभिन्न दलों की मिली जुली सरकार केन्द्र व राज्यों में निर्मित हो रही है। जिसे गठबंधन सरकार या कई दलों की मिली जुली मिश्रित सरकार कहा जाता है। संसदीय लोकतंत्रा में सरकार का गठन, उसका संचालन, पुनर्निर्माण, विशिष्ट संसाध्नों की उपलब्ध्ता, सहयोगियों की निश्चित संख्या, सुनिश्चित राजनीतिक आधार एवं राजनीतिक निपुणता आदि कारकों पर आधरित होता है। गठबंधन की राजनीति परिस्थितियों के गर्भ से उत्पन्न होती है। संसदीय शासन प्रणाली में उसी राजनीतिक दल को सरकार के गठन का अधिकार मिलता है जिसके पास विधियिका के निचले सदन में आधे से अधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त होता है। किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होने पर अन्य दलों की सहायता से मिली जुली सरकार बनाती है जिसे हम गठबंधन की सरकार के नाम से जानते है। गठबंधन सरकार में दो या दो से अधिक दल मिलकर बनाता है। जनता का किसी एक राजनीतिक दल में विश्वास नहीं होने पर मतदाता जब विकल्प की तलाश करते है तब गठबंधन की प्रक्रिया शुरू होती है। भारत जैसे विशाल देश में भारतीय समाज आज न केवल जाति, धर्म और गरीब–अमीर पर बँटा हुआ है बल्कि वर्ग, जीवनशैली, व्यवसाय आदि के आधार पर बँटा हुआ है। क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय दल प्रभावी होते है क्योंकि वे मतदाताओं के हितो के अनुकूल सिद्ध होते है। भारत में गठबंधन की सरकार राज्य स्तर पर प्रारंभ हुई। 1999 के चुनाव के बाद छोटे–छोटे दल की भरमार हो गई। क्षेत्रीय दल हावी होने लगा। जल्दी–जल्दी चुनाव होने के कारण देश पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। गठबंधन सरकार का मंत्रीमंडल दिशाहीन और मूल्यविहिन राजनीति को बढ़ावा देते है। लोकतंत्र की सफलता के लिए राजनीतिक दलो में सहनशीलता और कर्तव्य परायणता की आवश्यकता है।

प्रस्तावना—

संक्रमण के दौर से गुजरती भारतीय लोकतंत्र की जमीनी सच्चाई देश को गठबंधन की राजधानी की ओर ध्केल रही है। किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होने के कारण विभिन्न राजनीतिक दलों की मिली–जुली सरकार बनती है, जिसे संयुक्त सरकार, गठबंधन सरकार, संविदा सरकार जैसे कई नामों से जाना जाता है। वर्तमान समय में गठबंध्न सरकार का विकल्प तेजी से बढ़ रहा है। मिली–जुली सरकार के गठन और जीवन के कार्यकरण के लिए जिस प्रतिमा और संस्कृति की आवश्यकता होती है, भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अभी तक वस्तुतः उसका अभाव रहा है। राजनीतिक दलों के लिए गठबंधन करना आसान होता है लेकिन निभाना उतना ही कठिन होता है जिससे गठबंधन की सरकार विकास के वादे तो करती है। परन्तु विकास उस क्षेत्र का होता है जहाँ के दल गठबंधन की सरकार में होते हैं। त्र की सफलता, सशक्त विपक्ष की उपस्थित में विद्यमान होती है। लोकतंत्रीय शासन में सत्ता पक्ष की मनमानी पर रोक लागने के लिए सशक्त विपक्ष का होना अति आवश्यक हैं भारतीय लोकतंत्र में शक्तिशाली विपक्ष का सदैव अभाव रहा है।

राष्ट्रीय कांग्रेस के अतिरिक्त जो राजनीतिक दल जो सत्ता से बाहर है, वे छोटी–छोटी टुकड़ियों में विभाजित है। जो स्वयं एक दूसरे का विरोध करते है, वे एक छत्रछाया में आने को भी तैयार नहीं होंगे। विपक्ष की इस विभाजित स्थिति का लाभ सत्तारूढ राष्ट्रीय कांग्रेस को प्राप्त होता रहा है। विपक्ष पर इसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि वह निरुत्साहित होकर विरोध के लिए विरोध की नीति अपनाते रहते है। यही कारण है कि भारत में प्रभावशाली विपक्ष का सदैव अभाव रहा है। भारतीय संसदीय परम्परा एवं संविधानुसार सरकारों का निमार्ण दलगत आधार पर होता है। जिस दल को बहुमत प्राप्त होता है वही दल सरकार बनाती है। केन्द्र सरकार के लिए लोकसभा में बहुमत होनी चाहिए वहीं राज्य सरकार के लिए विधानसभा में बहुमत वाले दल सरकार बनाती है, परन्तु यदि किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होने पर अन्य दलों की सहायता से मिली जुली सरकार बनाती है जिसे हम गठबंधन की सरकार के नाम से जानते है। जिसका मतलब है कि 'कई दलो की मिलीजुली मिश्रित सरकार का बनना। गठबंधन सरकार में दो या दो से अधिक दल मिलकर बनाता है। सह गठबंधन चुनाव में पूर्व या चुनाव के बाद भी बनता है जो कार्यक्रम और नीतियों में समान विचारधारा को अपनाते हैं।

गठबंधन सरकार की उत्पत्ति के कारण छोटे–बड़े सभी देशों में लगभग समान है। जनता का किसी एक राजनीतिक दल में विश्वास नहीं होने पर मतदाता जब विकल्प की तलाश करते है तब गठबंधन की प्रक्रिया शुरू होती है। जब कोई समाज परिवर्तन के दौर से गुजरता है, तब परिस्थितियाँ वश गठबंधन अनिवार्य बन जाता है। वर्तमान समय में कोई भी समाज स्थिर नहीं है। खासकर भारत जैसे विशाल देश में भारतीय समाज आज न केवल जाति, धर्म और गरीब–अमीर पर बँटा हुआ है बल्कि वर्ग, जीवनशैली, व्यवसाय आदि के आधार पर बँटा हुआ है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विभाजन निर्वाचन को प्रभावित करता है और किसी राजनीतिक दल के लिए बहुमत प्राप्त करना कठिन हो गया है। क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय दल प्रभावी होते है क्योंकि वे मतदाताओं के हितो के अनुकूल सिद्ध होते है। इन कारणो से जनता का मत बँट जाता है और किसी भी दल को बहुमत नहीं मिल पाता है। फलतः गठबंधन सरकार बनाना अनिवार्य हो जाता है।

गठबंधन सरकार के फायदे :–

सरकार बनाने के लिए समान नीति का होना आवश्यक है। गठबंधन सरकार में भी समान नीति को मानने वाले पार्टियाँ सम्मिलित है। सरकार में शामिल होने वाले सभी राजनीतिक दलों द्वारा विचार–विमर्श किया जाता है। गठबंधन सरकार में साझा कार्यक्रम बनती है और उसका सामूहिक उत्तरदायित्व होता है। सरकार द्वारा लिए गए निर्णय उसके विभिन्न घटक राजनीतिक दलो का निर्णय माने जाते हैं। इसलिए कोई भी कार्य करने से पूर्व सभी राजनीतिक दल विचार–विमर्श करता है और इससे देश की जनता के हित में अधिकाधिक निर्णय लिये जाते है।

गठबंधन सरकार से नुकसान :–

सरकार की स्थापना के लिए गठबंधन प्रायः निर्वाचन के बाद ही करते है। किसी भी दो दल का राजनीतिक मुद्दा निर्वाचन के लिए एक सवाल नहीं रहता है। वे गठबंधन तो मंत्रीमंडल के गठन के लिए करते है। गठबंधन के बाद विभिन्न राजनीतिक दल के नेता पद और मंत्री पद के लिए तनाव उत्पन्न करता है इसमें प्रभावशाली राजनीतिक दल सरकार पर हावी हो जाता है जिसके कारण अन्य दलो में वैमनस्यता की भावना आ जाती है। वैमनस्यता जब अधिक बढ़ जाता है वो गठबंधन से समर्थन वापस लेकर सरकार गिरा देता है। जिससे फिर जनता को आम चुनाव का सामना करना पड़ता है जिससे देश की आर्थिक हानी उठानी पड़ती है उससे तात्कालिक और दूरगामी परिणाम अत्यंत घातक होता है। प्रायः हम लोग देखते है चुनाव के समय आवश्यक वस्तुओं का दाम आसमान छूने लगता है। जिससे आम जनता को काफी संकट का सामना करना पड़ता है। वर्तमान राजनीति में किसी भी राजनीतिक दलों की अपनी कोई नीति नहीं है, सिद्धान्त नहीं है जिससे जनता

के हितों की रक्षा होती है। वर्तमान समय राजनीति दलो की जनता के हितो की उपेक्षा ही करती है। इस संबंध में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि केन्द्र में साझाा सरकार के औचितय को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भारत में बहुदलीय और वैविध्यपूर्ण देश के लिए अनुपयुक्त है। भारत में अनेक राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनीतिक दल है जिनकी राष्ट्रीय राजनीति में विशष अवसरों पर महत्वपूर्ण भूमिका सिद्ध हुआ है।

गठबंधन की सरकार विकासशील राष्ट्रो के लिए अनुपयुक्त है क्योंकि वहाँ सभी राजनीतिक के अपने–अपने सिद्धान्त और नीति है। विकासशील या अविकसित देशों में राजनीतिक दल सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और एतिहासिक आधार से भिन्नता रखते है। इन देशों में गठबंधन सरकार की अस्थिरता की संभावना अधिक है, वही विकसित राष्ट्र में गठबंधन की सरकार सफल रही है। क्योंकि वहाँ राजनीतिक दलों की संख्या भी कम है लोगों की सीमित विकल्प है। विकसित देशो में समाज का धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विकृत विभाजन नहीं है। वहाँ एक राजनीतिक दल दूसरे राजनीतिक दलों से आधारभूत भिन्नता रखता है वह भी सिर्फ विकास का मुद्दे पर जिसके कारण विकसित देशो में गठबंधन का आधार मजबूत रहता है।

भारतीय पृष्ठभूमि में गठबंधन सरकार :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में कांग्रेस की सरकार जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में बना। उस समय कांग्रेस के अलावा कोई अन्य दल नहीं था परन्तु उस समय भी विभिन्न विचारधारा के मानने वाले व्यक्तियाँ या संस्थाओं से विचार–विमर्श करती रहती थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विभिन्न विचारधारा जैसे समाजवाद, साम्यवादी, पूंजीवादी सभी राजनीतिक विचारधाराओं को मानने वाले लोग कैबिनेट में शामिल थे परन्तु उसे हम गठबंधन की सरकार की संज्ञा नहीं दे सकते। भारत में गठबंधन की सरकार राज्य स्तर पर प्रारंभ हुई। 1953 में आंन्ध्रप्रदेश में संयुक्त मंत्रीमंडल की स्थापना हुई जो मात्र 13 महीने तक ही सरकार चली। उसके बाद उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में मिली–जूली सरकार की निर्माण किया गया। जनता को आशा थी कि मिल–जूली सरकार कांग्रेस से अच्छी चलाएगा। परन्तु सोच निराधार निकला। वर्तमान समय में भी भारत के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार, मध्यप्रदेश आदि राज्यो में गठबंधन की सरकार है। परन्तु यह सरकार कितनी दिन टिकती है कहना मुश्किल होता है।

भारत में 1970 के दशक में भारतीय राजनीतिक में महत्वपूर्ण परिवर्त्तन हुए जिसके कारण भारतीय जनता ने विकल्प ढूढ़ना प्रारंभ कर दिया। इसी बीच 1975 में इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगा दी। आपातकाल का परिणाम 1977 के चुनाव में दिखायी दिया। कांग्रेस को भारी हार का सामना करना पड़ा और पहली गैर कांग्रेसी पार्टी जनता पार्टी ने सरकार मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बना। इस सरकार के अलग–अलग महत्वकांक्षा और उद्देश्य रखने वाले लोग शामिल थे। हकीकत में जनता पार्टी का अपना कोई विचारधारा नहीं थी। परन्तु सरकार के अन्दर नेताओं के महत्वकांक्षा के चलते जनता पार्टी में फूट पड़ गयी जिसका परिणाम मोराजी देसाई की सरकार का पतन हुआ और चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने। जो अन्तर्विरोध के कारण 14 जनवरी 1980 को गिर गई। 1980 में लोकसभा चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ और सरकार इंदिरा गांधी के नेतृत्व में बनी।

1989 में गठबंधन सरकार की स्थापना संयुक्त मोर्चा का वी.पी.सिंह के नेतृत्व में बना परन्तु वह सरकार भी 11 महीना तक ही चल पाया। इस सरकार का पतन भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने के कारण हुआ। इसके बाद 10 नवम्बर 1990 में चन्द्रशेखर सिंह ने कांग्रेस का समर्थन लेकर गठबंधन की सरकार बनाये जो 21 जून 1991 तक ही चल पाई। जून 1991 में पी.वी.नरसिम्हा राव के नेतृत्व में स्थाई सरकार बनी जिसने पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा किया।

मई 1996 में भारत में आम चुनाव हुआ जिसमें किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला। वाजपेयी जी सरकार मात्र 13 दिन चली उसके बाद देवगौड़ा की सरकार बनी जो कांग्रेस द्वारा समर्थन वापस लेने के कारण मात्र 10 महीना ही चला। जो 11 अप्रैल 1997 को गिर गई फिर उसके बाद श्री इन्द्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में गठबंधन की सरकार बना किन्तु कांग्रेस ने जैन आयोग की रिपोर्ट विवाद पर समर्थन वापस ले ली जिससे गुजराल सरकार को त्यागपत्र देना पड़ा।

मार्च 1998 में पुनः लोकसभा का चुनाव हुआ जिसे अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में गठबंधन की सरकार बनी जो 13 माह तक चल पाई। अक्टूबर 1999 में पुनः चुनाव हुआ फिर 24 दलों का गठबंधन बनाकर वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार बनी। 1999 के चुनाव के बाद छोटे–छोटे दल की भरमार हो गई। क्षेत्रीय दल हावी होने लगा। ये दल राष्ट्रीय हित न देखकर क्षेत्रीय हितो पर ज्यादा ध्यान देने लगे। उसके बाद अस्थिरता का दौड़ प्रारंभ हो गया। जल्दी–जल्दी चुनाव होने के कारण देश पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। सरकार के अस्थिरता से शेयर बाजार, उद्योग–धन्धे, विदेशी निवेश, विदेशों से संबंध पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सभी गठबंधन सरकार सभी सत्ता हासिल करना चाहता है चाहे देश की स्थिति जैसा भी हो जाए। संसदीय सरकार में सामूहिक उत्तरदायित्व होना चाहिए जो गठबंधन सरकार के लिए मुश्किल है। गठबंधन सरकार का मंत्रीमंडल दिशाहीन और मूल्यविहिन राजनीति को बढ़ावा देते है। गठबंधन की सरकार में प्रधानमंत्री जैसे गरिमामयी पद को सामूहिक नेतृत्व की आड़ में कुचल दिया जाता है। 2004 में पुनः चुनाव हुआ उसमें मनमोहन सिंह के नेतृत्व में सरकार बनी। 2009 के चुनाव में भी कांग्रेस के नेतृत्व में गठबंधन की सरकार बनी। उस समय पूरे देश में राजनीतिक दल दो खेमों में बँट गया। एन.डी.ए. और यू.पी.ए.। एन.डी.ए. का नेतृत्व भाजपा कर रही है वहीं यू.पी.ए. का नेतृत्व कांग्रेस कर रही है।

गठबंधन की सरकार इस कदर भारतीय राजनीति पर हावी हो गया कि बिना उसके सरकार नहीं बनती है। 2014 के चुनाव में भाजपा के मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा और भाजपा ने गठबंधन सरकार बनायी। इसमें लगभग 15 दलों का गठबंधन था। दूसरी ओर कांग्रेस की यू.पी.ए. गठबंधन को हार का सामना करना पड़ा। 2019 के लोकसभा चुनाव में एन.डी.ए. गठबंधन को लगभग दो तिहाई बहुमत मिला। अकेले भारतीय जनता पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ फिर भी गठबंधन की सरकार बना है। लगभग दर्जन भर क्षेत्रीय दलो का गठबंधन है। 2019 के चुनाव के बाद सरकार से कई क्षेत्रीय दल अपना समर्थन भी सरकार से वापस ली है। परन्तु भारतीय जनता पार्टी का अपना बहुमत होनेके कारण सरकार स्थायी रूप से चल रही है।

निष्कर्ष–

केन्द्र की सरकार तो गठबंधन का ही चलने की परम्परा सी बन गई है यदि राज्यों की सरकार को देखे थे भारत के आधे से अधिक प्रान्तों में गठबंधन का ही सरकार है। वर्तमान समय में किसी भी दल का कोई ठोस नीति और सिद्धान्त का अभाव है। केन्द्र राज्य में एक ही दल सहयोग और विरोधी भी है। भारतीय संसदीय प्रणाली बहुदलीय होने के कारण भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया है। इससे संसदीय प्रणाली एवं प्रचलित आम समयो पर प्रतिकूल प्रहार हुए है। स्वच्छ और स्थायी सरकार के लिए भारत में राजनीतिक दलो को सीमित करने की आवश्यकता है। राजनीतिक दल के चरित्र का विश्लेषण कर उसके लक्ष्य को जानने की आवश्यकता है। जो भी राजनीतिक बने, वे उच्च आदर्शो और जन आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाले हो, वे मिल–जुलकर ऐसी सरकार बनाये जो राष्ट्रीय हित में हो। लोकतंत्र की सफलता के लिए राजनीतिक दलो में सहनशीलता और कर्तव्य परायणता की आवश्यकता है।

हमें अपने देश की राजनीतिक परिस्थितियों और राजनीतिक संस्कृति के अनुरूप मार्ग खोजना होगा। इस प्रकार गठबंधन सरकार विभिन्न राजनीतिक दलों के परस्पर सहयोग से बनती हैं। इसमें विभिन्न मतों और नीतियों को मानने वाले दल सम्मिलित होते हैं। जब गठबंधन की नीतियों का निर्धारण किया जाता है, तब

उसमें सम्मिलित सभी राजनीतिक दलों द्वारा विचार–विमर्श किया जाता है। सभी दलों के विचारों को मिश्रण ही नीति का रूप ग्रहण करता है। गठबंधन सरकार साझा कार्यक्रम बनाती है और उसका सामूहिक उत्तरदायित्व होता है।

सरकार द्वारा लिए गए निर्णय उसके विभिन्न घटक दलों के निर्णय माने जाते हैं। गठबंधन सरकार राजनीतिक समुदायों अथवा समुदायों अथवा शक्तियों का गठजोड़ है, जो अस्थायी तथा कुछ विशिष्ट प्रयोजनों के लिए होता है। जिन दलों के सहयोग के परिणामस्वरूप गठबंधन सरकारों का निर्माण होता है, वे एक बुनियादी राजनीतिक कार्यक्रम के ऊपर एकमत होती हैं। क्या गठबंधन सरकारों का प्रयोग विफल रहा है? इस प्रश्न का उत्तर हाँ या ना में देना कठिन है। मिली जुली सरकारों का अनुभव भी मिला–जुला है। गठबंधन सरकार सहयोगी दलों से बहुत अध्कि मात्रा में सहनशीलता और कर्तव्य परायणता की मांग करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

- एन.सी.साहनी–कोलिशन पॉलिटिक्स इन इंटिया 1997
- कोठारी, रजनी, कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स, नई दिल्ली ओरियेन्ट लोगमैन लि0, 1685
- कौशिक, पीताम्बर दास, ''उत्तर प्रदेश विधानसभा में मिड टर्म इलैक्शन आव मई 1980 एण्ड इम्पैक्स'' पालिटिकल सांईस रिव्यू, 1989
- मिश्रा के0 पी0, फैकशनेलिज्म इन यू0पी0 कांग्रेस में इकबाल नारायण स्टेट पालिटिक्स इण्डिया, मेरठ मीनाझी 1981।
- पार्वती एए, इमरजेंस ऑफ कोअलिशन सिस्टम इन इंडियाः प्रॉब्लम्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स, थर्ड कॉन्सेप्ट, खंड 19, क्रमांक 217, मार्च, 2005, पृष्ठ – 9
- रेणु सक्सेना, 'द रोल ऑफ ओंपोजीशन इन इण्डिया पोलिटिक्स, अनमोल पब्लिकेशन दिल्ली, 1986, पृ० 2।
- डी देवनाथन, स्ट्रेन्थनिंग कोअलिशन एक्सपेरिमेंट ऑफ सेंटरः अ फ्यू सजेशन्स, थर्ड कॉन्सेप्ट, खंड 12, क्रमांक 143, जनवरी, 1999, पृष्ठ – 26
- डॉ सत्य नारायण मण्डल, भारत में गठबंधन सरकार : एक विश्लेषण, जे0ई0टी0आई0आर0, वाल्यूम–7, इश्यू–8, 2020
- डॉ0 कश्यप एवं गुप्त : राजनीतिक कोष–2008
- डॉ0 किरण झा– भारतीय राज व्यवस्था 1998
- डॉ0 वी.वी.तायल : भारतीय शासन और राजनीति 1998
- दैनिक भास्कर, पटना।
- जेः हार्वे एण्ड एल० बेदर– द ब्रिटिश कांस्टीटूयशन लदन 1965 पृ० 150–151।
- जेम्स, बाईस– मोर्डन डेमोक्रेसीज, मैकमिलन एण्ड कम्पनी लि० लन्दन, 1923, भाग –1, पृ० 20
- जनसत्ता, नई दिल्ली